अनुमोदित

28-8-19

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

स्नातकोत्तर पत्रोपाधि पाठ्यक्रम

विषयः—पंचकर्म

संकाय – आयुर्वेद संकाय

(नियम, परीक्षा योजना)

सत्र 2018–19

14/7/18

डॉ. प्रो. बी. एम. गुप्ता
सदस्य
प्राचार्य
मानसरोवर आयुर्वेदिक
महा. भोपाल.

डॉ. सौरभ मेहता
विशेष आमंत्रित सदस्य
व्याख्याता
मानसरोवर आयुर्वेदिक
महा. भोपाल

डॉ. शंकरदयाल उपाध्याय
विशेष आमंत्रित सदस्य
व्याख्याता
पं. खुशीलाल शास. आयुर्वेद
महा. भोपाल.

14.7.18

डॉ. [illegible] तिवारी
परामर्शी पंचकर्म
संयोजक
अ. बि. वा. हि. वि. वि.
भोपाल.

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

स्नातकोत्तर **पत्रोपाधि पाठ्यक्रम**

विषय - पंचकर्म

परिचय

पंचकर्म का उद्देश्य :- मानव जीवन में मूलभूत परिवर्तन हुए हैं, जिससे आहार संबंधी उच्च कैलोरी युक्त भोजन तथा अतिशीत भोजन ग्रहण करने की आदत सी हो गई है। आरामदेय जीवन व्यतीत करने की लालसा में अनेक प्रकार की व्याधियों से मनुष्य ग्रसित होते जा रहे हैं, जिसमें प्रमुख रूप से मोटापा, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हाइपोथाइराडिज्म, हृदय रोग आदि सामान्य हैं। ये सभी रोग पूरे भारत में बहुत तेजी से फैल रहे है। अब ग्रामीण परिवेश को भी अपने प्रभाव मे ले लिये हैं। आधुनिक चिकित्सा शास्त्र में इनकी कोई कारगार या स्थाई चिकित्सा उपलब्ध नहीं है। पंचकर्म ऐसी चिकित्सा पद्धति है जो वर्तमान मे तेजी से बढ़ रहे रोगों जिनकी कोई विशेष चिकित्सा उपलब्ध नहीं है पर भी कारगार है। पंचकर्म चिकित्सा के क्षेत्र में सर्वोत्तम है। जिसमें शोधन अंगों के स्तर से भी आगे कोशिका स्तर पर भी कारगार है।

आयुर्वेद के दोनों प्रयोजन स्वस्थ के स्वास्थ्य की रक्षा तथा आतुर व्यक्ति के रोग प्रशमन, इनकी सिद्धी पंचकर्म द्वारा संभव है, क्योंकि पंचकर्म द्वारा ही रोगो का समूल नाश होता हैं।

पंचकर्म की आवश्यकता :- वर्तमान समय एक व्यस्तम् आधुनिक मशीनी युग बन गया है, जिसके कारण लोगों की जीवनचर्या में मूलभूत परिवर्तन हुए हैं। जिसमें आहार संबंधी फास्ट-फूड, डिब्बा बन्द भोजन, उच्च कैलोरी युक्त भोजन ग्रहण करने से शारीरिक श्रम एकदम अल्प हो गया है एवं उच्च जीवक महत्व कक्षाओ से कम तथा मानसिक श्रम अधिक हो गया है। आरामदेह जीवन व्यतीत करने की लालसा में व्यक्ति अनेक प्रकार की बीमारियों से ग्रसित हो रहा है। पक्षाघात, कटिशूल, ग्रीवाशूल, आमवात और सन्धिगतवात जैसी बीमारियाँ बढ़ रहीं हैं। साथ ही रोग प्रतिरोधक क्षमता संबंधी के रोग अधिक तेजी से बढ़ रहे हैं। यह रोग ग्रामीण परिवेश तक पहुँच चुके हैं।

पंचकर्म एक ऐसी चिकित्सा पद्धति है जो तेजी से बढ़ रहे रोग जिनकी कोई चिकित्सा उपलब्ध नहीं है या केवल शल्य चिकित्सा पर आधारित है, पर कारगर है। जैसे हार्मोनल संबंधी रोग, इम्यून संबंधी, त्वक् रोग, जैसे सोरयसिस, बिचर्चिका, मस्कुलोस्कलेटर, न्युरोलॉजिक, रूमाल्जिम, स्पाइनल कार्ड संबंधी रोग आस्टियोपोरोसिस, मानसिक व्याधियाँ जैसे अनिद्रा, उन्माद, अपस्मार, तथा इ.एन.टी. के रोग आदि में पंचकर्म चिकित्सा सर्वोत्तम है।

पंचकर्म के महत्व :- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जो रोगी अनेक प्रकार की चिकित्सा से रोग मुक्त नहीं होते वह पंचकर्म की आशुकारी चिकित्सा से तत्काल लाभान्वित होते हैं।

वर्तमान समय मे पंचकर्म सम्पूर्ण विश्व में डी-टॉक्सीफिकेशन एवं रिलेक्स थेरेपी के रूप में विख्यात है। पंचकर्म के ही कारण मेडीकल टूरिज्म के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं। पंचकर्म चिकित्सा लेने हेतु अब लोग विदेशों से भी भारत आने लगे हैं। इसकी ख्याति का अनुमान इससे लगा सकते है कि विदेशों में

भी अनेक आयुर्वेद एवं पंचकर्म केन्द्र खुल गये हैं। आज विश्व एक ऐसी चिकित्सा पद्धति चाहता है जो सुरक्षित, उपद्रव रहित हो और जिसका प्रभाव अधिक समय तक बना रहे तथा रासायनिक पदार्थो का उपयोग न हो।

आयुर्वेद की पंचकर्म चिकित्सा पद्धति एक ऐसी चिकित्सा पद्धति है, जिसमें चिकित्सा अनुसंधान, रोगमुक्ति, स्वास्थ्य, अनुवर्तन क्षेत्र में नए आयाम स्थापित कर सभी चिकित्सा पद्धतियाँ में विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है।

भारत में मानवता की सेवा हेतु 2500 वर्ष पुरानी आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति ही वर्तमान में विभिन्न नामो से प्रचलित सभी–चिकित्सा पद्धतियो की मूल पद्धति है इसे सांईस ऑफ लाइफ के नाम से जाना जाता है। विश्व की सबसे पहली चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद है। आयुर्वेद हमें सिखाता है कि हम अपने को कैसे स्वस्थ बनाये रखें तथा रोगों से कैसे बचें कैसे इलाज किया जाए तथा कैसे हम दीर्घायु बनें।

पाठ्यक्रम के लिए योग्यता

1. मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक उत्तीर्ण (किसी भी संकाय में)।
2. आयु का कोई बन्धन नहीं।
3. किसी भी विभाग में नियुक्त कर्मचारी भी पाठ्यक्रम में भाग ले सकता है।
4. अवधि – एक वर्ष
5. यह पाठ्यक्रम अध्यादेश क्र.101 से संचालित होगा।

प्रश्नपत्र क्रमांक	प्रश्नपत्र का नाम	प्रति सप्ताह पाठ्य काल	क्रेडिट	परीक्षा अवधि	अधिकतम अंक		
					आंतरिक मूल्यांकन	वि.वि. परीक्षा	योग
प्रश्नपत्र – 1	पंचकर्म एवं आयुर्वेद के मूल सिद्धांत	4	4	3 घण्टें	30	70	100
प्रश्न पत्र – 2	मानव शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान	4	4	3 घण्टें	30	70	100
प्रश्न पत्र – 3	पोषण आहार विज्ञान एवं पंचकर्म उपकल्पना विज्ञान	4	4	3 घण्टें	30	70	100
प्रश्न पत्र – 4	स्वस्थवृत तथा रोग निदान एवं चिकित्सा	4	4	3 घण्टें	30	70	100
प्रायोगिक –1		2	2	4 घण्टें	–	100	100
प्रायोगिक –2		2	2	4 घण्टें	–	100	100

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र)

स्नातकोत्तर पत्रोपाधि पाठ्यक्रम

प्रथम प्रश्न पत्र – पंचकर्म एवं आयुर्वेद के मूल सिद्वांत

अधिकतम अंक– 100 | उत्तीर्णांक– 40

आंतरिक मूल्याकंन–30

बाह्य मूल्याकंन– 70

उद्देश्य – 1.स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य का परीक्षण
2. आतुर के विकार का प्रशमन
3.साध्य, असाध्य रोगों की प्रभावी स्थायी चिकित्सा।

आवश्यकता –शहरी और ग्रामीण परिवेश में स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा तथा रोग प्रशमन हेतु आवश्यक चिकित्सा **पद्धति** । वर्तमान में तेजी से बढ़ रहे रोगों के इलाज की उत्तम तथा सस्ती चिकित्सा **पद्धति** होने से लोगों में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रही है।

महत्व :– देशी चिकित्सा **पद्धति** के बढ़ते – प्रभाव को जन–जन तक पहुचाने का पचंकर्म उचित माध्यम है ।

इकाई– 1 **चिकित्सा का सामान्य विवरण** :– आचार्य वाग्भट्ट द्वारा बताये हुए चिकित्सा के दो मुख्य उपक्रम प्रथम संतर्पण, द्वितीय अपतर्पण के भेद, शमन और शोधन चिकित्सा, शमन चिकित्सा के प्रकार, शोधन चिकित्सा के प्रकार पंचकर्म एवं शोधन चिकित्सा नहीं अपितु संपूर्ण चिकित्सा पद्वति है। आयुर्वेद के मूल सिद्धांतों की विवेचना, अष्टांग आयुर्वेद– आयुर्वेद की आठ शाखाओं की जानकरी। अग्नियॉ एवं धारणीय–अधारणीय वेग।

(1) पंचकर्म चिकित्सा के मूल स्थान

(2) पंचकर्म एवं शोधन कर्म

(3) पंचकर्म का वैषिष्ठय

(4) पंचकर्म और त्रिदोष

(5) सामान्य चिकित्सा सिद्धांत एवं पंचकर्म

(6) पंचकर्म के योग्य व्यक्ति

(7) पंचकर्म का विशेषज्ञ

(8) पंचकर्म के परिहार विषय

(9) पंचकर्म के वर्जित विषय

इकाई– 2 पंचकर्म के पूर्वकर्म, स्नेहन, स्वेदन, वमन,विरेचन–कर्म का परिचय, आवश्यक द्रव्य तथा पूर्वकर्म, प्रधानकर्म, पश्चात्कर्म। योग्य अयोग्य, सम्यक, अति एवं अयोग्य का ज्ञान, मात्राकालादि का निर्धारण, व्यापद एवं चिकित्सा उत्तम, मध्यम एवं हीन शुद्धि निर्धारण का ज्ञान एवं संसर्जन क्रम।

इकाई– 3 रोगो का वर्गीकरण, रोग परीक्षा एवं निदान, रोग विनिश्चय।

इकाई– 4 वस्तिकर्म, शिरोविरेचन या नस्यकर्म एवं रक्तमोक्षण का परिचय परिभाषा, प्रयोजन, महत्व एवं विधि का पूर्वकर्म, प्रधानकर्म, पश्चात्कर्म, योग्य, अयोग्य, सम्यक, अति एवं अयोग्य का ज्ञान, मात्राकालादि का निर्धारण, व्यापद एवं चिकित्सा उत्तम, मध्यम एवं हीन शुद्धि निर्धारण का

(2) कटिवस्ति

(3) जानुवस्ति

इकाई–5 **रोगों का वर्गीकरण** :–साध्य, असाध्य रोग,80 वातज, 40 पित्तज,20 कफज रोगों का वर्णन।

रोग निदान :– रोगी परीक्षा, त्रिविध परीक्षा (दर्शन, स्पर्शन, प्रश्न) अष्ठ विध परीक्षा, दश विध परीक्षा।

रोग विनिश्चय :– इसमें रोग निदान, कारण, लक्षण, परिणाम वर्गीकरण, साध्य, असाध्य, अरिष्ट लक्षण।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. चरक सुश्रतु वागभट्ट के आवश्यक अंश।
2. काय चिकित्सा :– कविराज रामरक्ष पाठक चौखम्बा, भारतीय अकादमी वारानासी सप्तम संस्करण 1996।
3. आयुर्वेद का वैज्ञानिक इतिहास :– आचार्य प्रियवृत शर्मा औरिएटंल वारानासी।
4. शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान :– डॉ. मजित बिड़दी।
5. क्रिया शरीर, प्रो. डॉ. कृष्ण कान्त पाण्डे।
6. आयुर्वेदीय क्रिया शारीर :– रणजीत राय देसाई।
7. भिषक्कर्म सिद्वि – डॉ.रमानाथ द्विवेदी।
8. द्रव्यगुण विज्ञान प्रियवृत शर्मा।
9. द्रव्यगुण विज्ञान यादव जी आचार्य।
10. चरक सुश्रतु वागभट्ट के उपयोगी अंश।
11. पंचकर्म ट्रिटमेंट ऑफ आयुर्वेद :– इनक्लुजीम केरलीय पंचकर्म प्रो. अजय कुमार शर्मा, श्री सतगुरू प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण 2002।
12. आयुर्वेदिक पंचकर्म विज्ञान – श्रीधर कस्तूरे वैद्यनाथ प्रकाशन
13. क्लीनिकल पंचकर्म डॉ.पी यादैय्या
14. भिषक्कर्म सिद्वि – डॉ. रमानाथ द्विवेदी।

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र)

स्नातकोत्तर पत्रोपाधि पाठ्यक्रम

द्वितीय प्रश्न पत्र – मानव शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान

अधिकतम अंक– 100 उत्तीर्णांक– 40
आंतरिक मूल्याकंन–30
बाह्य मूल्याकंन– 70

उद्देश्य – चिकित्सा करने से पूर्व मानव शरीर संरचना एवं उसकी क्रिया का गुण ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है।

आवश्यकता – मानव शरीर संरचना में अस्थियों, मांस पेशियों एवं विभिन्न संस्थानों की जानकारी और उनके क्रिया–कलापों की विसंगति होने से रोग की उत्पत्ति होती है विसंगति की जानकारी होने पर ही रोग का प्रशमन किया जा सकता है।

महत्व – शरीर संरचना जानकारी न होने पर शरीर एक मांस पिण्ड अकार का ही होता तो चिकित्सा संभव नहीं थी।

इकाई– 1 मानव शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान, परिचय, कोशिका संरचना एवं कार्य, ऊतक, मानवीय तंत्र का संगठन। अस्थि एवं मांसपेशी तंत्र, अस्थि तंत्र, परिचय, कार्य, अस्थियों का वर्गीकरण, मांसपेशी तंत्र, परिचय, संरचना, क्रिया, प्रकार ,कार्य।

इकाई– 2 पाचन एवं उत्सर्जन तंत्र, पाचन तंत्र का सामान्य परिचय,एवं संबंधित विभिन्न अंगों की संरचना, क्रिया एवं महत्व, उत्सर्जन तंत्र की परिभाषा एवं संबंधित विभिन्न अंगों की संरचना क्रिया कार्य एवं महत्व।

इकाई– 3 रक्ताभिसरण संस्थान एवं श्वसन संस्थान रक्ताभिसरण संस्थान का परिचय, हृदय की संरचना, कार्य एवं क्रिया का ज्ञान श्वसन संस्थान का परिचय, एवं संरचना, कार्य, क्रिया एवं महत्व

अंतःस्त्रावी ग्रन्थियॉ – अंतःस्त्रावी ग्रंथियों की संरचना, क्रिया एवं कार्य तथा उनसे स्र्वित होने वाले हार्मोन तथा हार्मोन की उपयोगिता।

इकाई– 4 मर्म विज्ञान :–

(1) शरीर के विभिन्न अंगों में पाये जाने वाले मर्मस्थल की जानकारी, मर्मों की संख्या एवं कार्य

(2) शरीर के अंगों का विभाजन (अ) सिर (ब) गला (स) धड़ (द) उर्ध्व शाखाएं (uper limb) (इ) अधो शाखाएं (lower limb)

(3) **अस्थि** संरचना एवं विकास तथा वृद्धि

(4) अस्थियों का रासानिक विश्लेषण

(5) अस्थि के भौतिक गुण

(6) मांस–पेशीसंस्थान (Muscular system)

(अ) एच्छिक मांस पेशियाँ

(ब) अनेच्छिक मांस पेशियाँ

इकाई–5 संक्षिप्त विवरण दांत, दांतों के कार्य, लाला स्त्राव ग्रंथियां, लालारस की भोजन पर क्रियाएं आमाशय के कार्य, पक्वाशय में पाचन, यकृत का कार्य, पित्त और उसके कार्य, अग्नाशय रस (Pancreatic juice), क्षुद्रांत्र की स्थिति और बनावट, वृहद् आंत्र के कार्य,आहार का शोषण तथा शरीर का पोषण।

चिकित्सा उपक्रम –

1. पाचन संस्थान की व्याधियाँ एवं उपचार
2. श्वसन संस्थान की व्याधियाँएवं उपचार
3. अस्थि संस्थान की व्याधियाँ एवं उपचार
4. रक्त संस्थान की व्याधियाँ एवं उपचार
5. तंत्रिका तंत्र की बीमारियाँ एवं उपचार
6. चर्म रोग
7. स्त्री रोग
8. नेत्र रोग
9. कर्ण रोग

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. चरक सुश्रुत वागभट्ट के उपयोगी अंश।

2. मानव शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान – डॉ. एच.आर नागेन्द्र, स्वामी विवेकानंद योग प्रकाशन 19 गयीपुरम सर्किल केम्पुगौडा नगर बैंगलौर।

3. सुश्रुत संहिता शरीर स्थान – डॉ. धाणेकर टीका।

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र)

स्नातकोत्तर पत्रोपाधि पाठ्यक्रम
तृतीय प्रश्न पत्र– पोषण आहार विज्ञान एवं पंचकर्म उपकल्पना विज्ञान

उत्तीर्णांक– 40

अधिकतम अंक– 100
आंतरिक मूल्याकंन–30
बाह्य मूल्याकंन– 70

उद्देश्य – मानव स्वास्थ्य के लिए उत्तम पोषण आहार निश्चित करना।
आवश्यकता – गुणवत्ता युक्त पोषण आहार का उत्पादन स्वस्थ्य मानव समाज के लिए आवश्यक है।
महत्व :– स्वस्थ्य जीवनचर्या हेतु योग, आयुर्वेद और पर्यावरण अत्यंत महत्वपूर्ण।

इकाई– 1 पोषण की आवश्यकता, आहार के पोषक तत्व, आहार संबंधी अध्ययन का उद्देश्य, आहार की आवश्यक मात्रा, भोजन का अर्थ, भोजन के मनोविज्ञान का कार्य, आहार शब्द का अर्थ एवं परिभाषा, आहार का महत्व एवं जीवन में उपयोगिता, आहार एवं स्वास्थ्य, आहार का पोषणिक वर्गीकरण।

इकाई– 2 कार्बोहाइट्रेड, वसा, प्रोटीन, खनिज, लवण एवं विटामिन की विस्तृत चर्चा, जल संतुलन की अवधारणा।

इकाई–3 भारत में आहार एवं पोषण की अवधारणा सामान्य भारतीय व्यंजनों का पोषक मूल्य, विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा आहार संबंधी विभिन्न योजनाएं एवं उनकी क्रियाशीलता , भारत में कुपोषण के कारण एवं उनको दूर करने के उपाय।

इकाई– 4 पंचकर्म उपकल्पना विज्ञान – भैषज्य कल्पना का आधारभूत सिद्धांत, कल्पना का सामान्य ज्ञान चतुर्विध स्नेहों के गुणकर्म, स्नेह प्रविचारणायें, स्नेह पाक विधि जैसे महानारायण तैल, विषगर्भ तैल, चंदनबलालाक्षादि तैल, सैन्धवादि तैल, त्रिफला घृत, पंचतिक्त घृत, गुग्गुल, ब्राह्मिघृत, अणुतेल, षड्बिन्दु तेल जात्यादि तैल, दशमुलादि तैल, आदि। घृत एवं तैल का मूर्छन संस्कार।

षष्ठिक्शाली स्वेद निर्माण, पत्रपिण्ड स्वेद निर्माण विधि, साल्वण स्वेद, विभिन्न प्रकार के स्वेदों हेतु उपयोग द्रव्यों एवं उपकल्पनाओं का ज्ञान।

चरकोक्त उपकल्पनीय एवं कल्प स्थान का सामान्य परिचय :–

वामक एवं वमनोपग द्रव्यों के सामान्य परिचय, संरक्षण विधि एवं काल आदि का ज्ञान, विभिन्न वमन कल्पों का निर्माण एवं उनकें उपयोग की विधि, वमन क्रिया से संबंधित कल्पनाओं, का उपयोग एवं सावधानियॉ वमन एवं विरेचन पूर्व आहार कल्पना।

विरेचन एवं विरेचन कल्पनों के सामान्य परिचय संरक्षण विधि एवं काल आदि का ज्ञान, विभिन्न विरेचन कल्पों का निर्माण एवं उनके उपयोग की विधि, विरेचन क्रिया से संबंधित कल्पनाओं के उपयोग एवं सावधानियॉ।

आस्थापन बस्ति के घटक, मात्रा, संयोजन, विधि आदि विभिन्न आस्थापन बस्तियों की निर्माण विधि जैसे माधुतैलिक, पिच्छा बस्ति, कृमिहर बस्ति, युक्त रथ बस्ति, सिद्ध बस्ति, वाजीकरण बस्ति, रसायन बस्ति आदि। स्नेह बस्ति के विभिन्न प्रकल्पों का ज्ञान।
नस्य भेदानुसार प्रकल्पों का ज्ञान जैसे अवपीडन नस्य, मर्श, प्रतिमर्श, धमापन, धूम।
शोधन, शमन एवं बृहण नस्य के प्रकल्पों का ज्ञान।
संसर्जन क्रम हेतु उपयोग विभिन्न कल्पनाओं का ज्ञान यथा–पेया, विलेपी, अकृतयूष, कृतयूष, अकृत मांस–रस, कृत मांसरस, कृशरा एवं पथ्य कल्पना आदि।

इकाई–5 **पंचकर्म विधि विज्ञान :–** संशोधन एवं संशमन चिकित्सा पद्धतियों का ज्ञान, पंचकर्म का सामान्य परिचय, परिभाषा, प्रयोजन। पंचकर्म के अयोग्य व्यक्ति, पंचकर्म कालविधि का ज्ञान। अष्टमहादोष्करभाव, पूर्वकर्म यथा–पाचन, स्नेहन, स्वेदन तथा स्नेहन स्वेदन की विभिन्न प्रक्रियायें जैसे षष्ठिक्शाली स्वेद, तिलमाष पिण्ड स्वेद, नाडी स्वेद, सर्वांग स्वेद, अन्य स्वेदन विधियॉ जैसे अण्ड स्वेद, जम्बीर पिण्डस्वेद, शिरोधारा शिरोबस्ति, कटि बस्ति, हद्यबस्ति, जानुबस्ति पत्र पिण्ड स्वेद सर्वांगंधारा, अवगाहपरिषेक आदि। अक्षितपर्ण, पुटपाक, विडालक, कर्णपूरण आदि का ज्ञान।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. स्वस्थ्यवृत्त विज्ञान – प्रो. रामहर्ष सिंह प्रकाशन चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान।
2. पोषण एवं स्वास्थ्य विज्ञान – रमा शर्मा एम. के मिश्रा प्रकाशक अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस।
3. पंचकर्म विज्ञान – प्रो. एच.एस. कस्तुरे।

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र)

स्नातकोत्तर पत्रोपाधि पाठ्यक्रम
चतुर्थ प्रश्नपत्र– स्वस्थवृत.तथा रोग निदान एवं चिकित्सा

उत्त्तीर्णांक– 40

अधिकतम अंक– 100
आंतरिक मूल्याकंन–30
बाह्य मूल्याकंन– 70

उद्देश्य – साध्य, असाध्य रोगों की प्रभावी स्थाई चिकित्सा।
आवश्यकता – शहरी और ग्रामीण परिवेश में स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा तथा रोग प्रशमन हेतु आवश्यक चिकित्सा पद्वति।
महत्व :– देशी चिकित्सा पद्वति के बढ़ते – प्रभाव को जन–जन तक पहुँचाने का पचंकर्म उचित माध्यम है।

इकाई– 1 स्वस्थ्यवृत्त सिद्वांत, स्वस्थ्य का लक्षण, स्वास्थ्य एवं व्याधि, दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुमती चर्या धारणीय, अधारणीय वेग।

इकाई– 2 चिकित्सालयीय स्वस्थ्यवृत्त –चिकित्सालय स्थल, चिकित्सालयीय अपद्रव्य निवारण व्यवस्था। समन्वित ग्रामीण विकास एवं स्वास्थ्य – समन्वित ग्रामीण विकास योजना।

इकाई–3 रोग निदान :–व्याधि परिभाषा एवं वर्गीकरण, निदान पंचक परिचय, षट्क्रियाकाल रोगमार्ग, वृद्धिक्षय लक्षण आम साम निराम विवेचन, व्याधिक्षमत्व एवं ओज, रोग एवं रोगी परीक्षा, उपद्रव एवं अरिष्ठ ।

इकाई– 4 रोग चिकित्सा :– काय एवं चिकित्सा की परीभाषा, चिकित्सा वर्गीकरण, चिकित्सा के मौलिक सिद्धांत, निम्नलिखित व्याधियों के निदान, सम्प्राप्ति, लक्षण एवं चिकित्सा–ज्वर, रक्तपित्त, प्रमेह, कुष्ठ, राजयक्षमा, अतिसार, ग्रहणी, श्वास, कास, हिक्का, पाण्डु, कामला, वातव्याधि, आमवात, वातरक्त, संधिवात, उरूस्तंभ, त्वक्विकार।

इकाई–5 रसायन– प्रभाव, वर्गीकरण, वातातपिक रसायन विधि, कुटीप्रावेशिक रसायन विधि नैमितिक रसायन, आचार रसायन, वयानुसार विभिन्न रसायनों का प्रयोग, आयु एवं वय का विचार, महत्वपूर्ण रसायन। वाजीकरण की परीभाषा, वाजीकरण द्रव्य, वाजीकरण प्रयोग, विधि, वाजीकरण योग, मानव में रसायन एवं वाजीकरण की उपयोगिता।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. चरक, सुश्रुत वाग्भट्ट के आवश्यक अंश।
2. भैषज्य रत्नावली :–
3. भाव प्रकाश
4. काय चिकित्सा :– कविराज रामरक्ष पाठक

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र)

स्नातकोत्तर पत्रोपाधि पाठ्यकम

प्रायोगिक– एक

1. प्रोजेक्ट फाईल – अंक 20
2. मौखिक परीक्षा – अंक 40
3. सतत् समग्र मूल्याकंन – अंक 40

अस्थियों का प्रदर्शन, शरीर अंगों एवं संस्थानों का मॉडल एवं चार्टस के माध्यम से प्रत्यक्ष दर्शन शरीर ताप मापन यंत्र, परिचय एवं ताप मापन विधि, रक्त भार मापन एवं यंत्र परिचय एवं मापन विधि, माइक्रोस्कोप के माध्यम से रक्तकणिकाओं का प्रत्यक्ष दर्शन आदि।

रोगी परीक्षा विधि एवं परीक्ष्य भावों का अध्ययन रक्त, मूत्र, पुरीष परीक्षा, प्रयोगशालीय कार्यो का आलेख चिकित्सकीय यंत्रों का प्रायोगिक ज्ञान।

1. शिर की प्रमुख अस्थियाँ, अस्थियों की संख्या एवं नाम कशेरूक दण्ड की प्रमुख अस्थियाँ, संख्या एवं नाम।
2. वक्ष की प्रमुख अस्थियों की संख्या एवं नाम।
3. हाथ की अस्थियों की संख्या एवं नाम।
4. पैर की अस्थियों की सख्या एवं नाम।
5. पंचकर्मोपयोगी विभिन्न उपकरणों की जानकारीः–
   - I. वाष्प स्नान।
   - II. शिरोधारा।
   - III. शिरोवस्ति।
   - IV. पत्र पिण्ड स्वेद।
   - V. सर्वांगधारा।
   - VI. रक्तमोक्षण।
   - VII. नस्य।

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र)

स्नातकोत्तर पत्रोपाधि पाठ्यक्रम
प्रायोगिक– दो

1. प्रोजेक्ट फाईल – अंक 20
2. मौखिक परीक्षा – अंक 40
3. सतत् समग्र मूल्याकंन – अंक 40

पंचकर्म प्रात्यक्षिक कर्माभ्यास, प्रायोगिक कार्यो से संबंधित पत्रों का निर्माण

1. पादभ्यंग
2. उद्वर्तन
3. पत्रपोटली
4. कटिवस्ति
5. ग्रीवावस्ति
6. जानुवस्ति
7. नस्य
8. शिरो अभ्यंग
9. नेत्र पूरण
10. कर्ण पूरण

डॉ. प्रो. बी.एम. गुप्ता
सदस्य
प्राचार्य
मानसरोवर आयुर्वेदिक
महा. भोपाल

डॉ. सौरभ मेहता (14.7.18)
विशेष आमंत्रित सदस्य
व्याख्याता
मानसरोवर आयुर्वेदिक
महा. भोपाल

डॉ. [illegible] (14/7/18)
विशेष आमंत्रित सदस्य
व्याख्याता
पं. खुशीलाल शर्मा आयुर्वेदिक
महा. भोपाल

डॉ. सुरेश तिवारी (14.7.18)
परामर्शी पंचकर्म
संयोजक
अ.बि.वा.हि.वि.वि.
भोपाल